कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (56) खण्ड - {111}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें..........

प्रश्न 1- यहाँ जो-जो साहूकार हैं, उनको नशा रहता है हमारे पास इतना धन है,यह- यह कारखाने आदि हैं। पर -

A- स्वर्ग में नहीं आयेंगे।

B- शरीर छोड़ा खलास।

C- ज्ञान तो नही है।

D- बाप को तो पहचानते नहीं।

प्रश्न 2- भारतवासियों ने ही अपनी बुद्धि कैसे बिगाड़ दी है ?

A- विकार में जाकर

B- तमोप्रधान बनने से

C- लाखों वर्ष कहकर

D- अन्धश्रद्धा से

प्रश्न 3- किस में व्यर्थ से इनोसेंट बनो ?

A- समय,

B- श्वांस,

C- बोल,

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 4- द्वापर युग से कलियुग तक भक्ति का क्रम पहचानिए ?

A- अव्यभिचारी भक्ति, फिर देवताओं की होती है,फिर 5 तत्वों की भक्ति

B- अव्यभिचारी भक्ति, फिर 5 तत्वों की भक्ति फिर देवताओं की होती है,

C- देवताओं की होती है, फिर अव्यभिचारी भक्ति, फिर 5 तत्वों की भक्ति

D- 5 तत्त्वों की भक्ति, फिर देवताओं की होती है, फिर अव्यभिचारी भक्ति

प्रश्न 5- हम बाप की याद में बैठते हैं। क्योंकि -

A- पावन दुनिया में जाना है।

B- बाबा के पास ही घर जाना है।

C- लायक बनाना है।

D- याद से आत्मा की बैटरी चार्ज करनी है।

प्रश्न 6- फायदा किस में है ?

A- गऊमुख से अमृत पीने में

B- यह सूर्यास्त आदि देखने में

C- पढ़ाई में।

D- सेवा करने में

प्रश्न 7- बाप भी कहते हैं मैं जानी जाननहार हूँ अर्थात्-

A- मन की बात जानते हैं।

B- सब आत्माओं को जानते हैं।

C- सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानता हूँ।

D- सभी के अच्छे बुरे कर्मों को जानते हैं।

प्रश्न 8- कहाँ जाने के लिए मनुष्य कितना माथा मारते हैं ?

A- शान्ति -धाम में

B- स्वर्ग में

C- रामराज्य में

D- मोक्ष पाने के लिए

प्रश्न 9- कौन सा धन्धा बाप ही सिखलाते हैं ?

A- धन कमाने का

B- एवरहेल्दी, एवरवेल्दी बनने का

C- अविनाशी ज्ञान रत्नों का

D- नर से नारायण बनने का

प्रश्न 10- सुख की प्रालब्ध कब पूरी हो जाती है ?

A- कलियुग में

B- द्वापर युग के प्रारंभ में

C- कलियुग के अन्त में

D- सतयुग त्रेता में

प्रश्न 11- कोई बहुत दुःख भोगते हैं। कोई काने, कोई बहरे होते है। इस संबंध में कौन सा कथन सही नहीं है-

A- स्प्रीचुअल ज्ञान नहीं लेते इसलिए

B- सब संस्कार अच्छे वा बुरे रूह में रहते हैं। जैसे-जैसे कर्म करते हैं, उस अनुसार उन्हें शरीर मिलता है।

C- कहेंगे पास्ट में ऐसे कर्म किये हैं जिसका यह फल है।

D- आत्मा के कर्मों अनुसार ही रोगी शरीर आदि मिलता है।

प्रश्न 12- क्या न समझने के कारण शिव शंकर को एक कह देते हैं ?

A- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर देवता हैं, शिव तो परमात्मा हैं।

B- आक्यूपेशन न जानने के कारण।

C- शिव भगवान है।

D- शिव और शंकर का मर्तबा अलग है।

प्रश्न 13- अभी तो अनेकानेक भाषायें हैं। क्योंकि -

A- अभी एक मत नहीं है इसलिए।

B- जैसा-जैसा राजा वैसी-वैसी उनकी भाषा चलती है।

C- जैसा देश वैसी भाषा।

D- क्योंकि अनेक राज्य हैं।

प्रश्न 14- 5 भूतों की प्रवेशता किसमें होती है ?

A- रावण में

B- जीवात्मा में

C- आत्मा में

D- शरीर में

प्रश्न 15- सर्वव्यापी है ?

A- ईश्वर

B- आत्मायें

C- 5 विकार

D- B और C

प्रश्न 16- साधू-सन्त आदि कोई से पूछे - परमात्मा से योग कैसे लगावें, उनसे कैसे मिलें तो कह देंगे -

A- नेती नेती

B- वह तो सर्वव्यापी है

C- भक्ति करो

D- नाम रूप से न्यारा है

भाग (56) खण्ड {111} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- *B.शरीर छोड़ा खलास*

तुमको इतना साहूकार कौन बनाता है? यहाँ तुम क्यों आये हो? वर्सा पाने। अगर कोई की तन्दुरूस्ती अच्छी है परन्तु धन नहीं है तो धन बिगर क्या होगा! वैकुण्ठ में तो तुम्हारे पास धन रहता है। *यहाँ जो-जो साहूकार हैं, उनको नशा रहता है हमारे पास इतना धन है, यह-यह कारखाने आदि हैं। शरीर छोड़ा खलास*

उत्तर 2- *C.लाखों वर्ष कहकर*

भारतवासियों ने ही लाखों वर्ष कहकर और सर्वव्यापी का ज्ञान देकर बुद्धि बिगाड़ दी है। तमोप्रधान बन गये हैं। वह इतने तमोप्रधान नहीं बने हैं, उन्हों की बुद्धि तो बड़ी तीखी है। उन्हों का जब आवाज़ निकलेगा तब भारतवासी जागेंगे क्योंकि भारतवासी एकदम घोर नींद में सोये हुए हैं।

उत्तर 3- *D.उपरोक्त सभी*

जैसे देवतायें इससे इनोसेंट थे ऐसे अपने वो संस्कार इमर्ज करो, व्यर्थ के अविद्या स्वरूप बनो क्योंकि यह व्यर्थ का जोश कई बार सत्यता का होश, यथार्थता का होश समाप्त कर देता है। *इसलिए समय, श्वास, बोल, कर्म, सबमें व्यर्थ से इनोसेंट बनो।* जब व्यर्थ की अविद्या होगी तो दिव्यता स्वत: अनुभव होगी और अनुभव करायेगी।

उत्तर 4- *A.अव्यभिचारी भक्ति, फिर देवताओं की होती है, फिर 5 तत्वों की भक्ति*

तुम जानते हो भक्ति मार्ग में हम भी उन यात्राओं पर जाते थे। बहुत बार यात्रा की होगी जो पक्के भक्त होंगे। *बाबा ने समझाया है एक शिव की भक्ति करना, वह है अव्यभिचारी भक्ति। फिर देवताओं की होती है, फिर 5 तत्वों की भक्ति करते हैं। देवताओं की भक्ति फिर भी अच्छी है* क्योंकि उन्हों का शरीर फिर भी सतोप्रधान है, मनुष्यों का शरीर तो पतित है ना।

उत्तर 5- *B.बाबा के पास ही घर जाना है*

आत्मा जानती है, हम आत्माओं का वह स्वीट घर है। बाप हमको शिक्षा दे रहे हैं जिससे हम पावन बनेंगे। याद करते-करते तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह है यात्रा। *हम बाप की याद में बैठते हैं क्योंकि बाबा के पास ही घर जाना है।*

उत्तर 6- *C.पढ़ाई में*

मनुष्य समझते ही नहीं हैं कि यह गऊमुख क्या है? कितने बड़े समझदार मनुष्य वहाँ जाते हैं, इसमें फायदा क्या?

और ही टाइम वेस्ट होता है। बाबा कहते हैं यह सूर्यास्त आदि क्या देखेंगे। फायदा तो इनमें कुछ नहीं। *फायदा होता ही है पढ़ाई में।* गीता में पढ़ाई है ना।

उत्तर 7- *C.सृष्टि के आदि-मध्य- अन्त को जानता हूं*

बाप भी कहते हैं मैं जानी जाननहार हूँ अर्थात् सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानता हूँ। परन्तु सुनाऊं कैसे! विचार की बात है ना इसलिए लिखा हुआ है - बाप रथ लेते हैं। कहते हैं मेरा जन्म तुम्हारे सदृश्य नहीं है। मैं इसमें प्रवेश करता हूँ। रथ का भी परिचय देते हैं।

उत्तर 8- *A.शान्ति-धाम में*

बाप बार-बार समझाते हैं, यह समझानी जो तुमको देता हूँ, हर कल्प देता आया हूँ। हमारा पार्ट है फिर 5 हज़ार वर्ष के बाद आकर कहता हूँ कि बच्चे पावन बनो। सतयुग में भी तुम्हारी आत्मा पावन थी, *शान्ति-धाम में भी पावन आत्मा रहती है। वह तो है हमारा घर। कितना स्वीट घर है। जहाँ जाने के लिए मनुष्य कितना माथा मारते हैं।*

उत्तर 9- *D.नर से नारायण बनने का*

धन्धे सभी में है नुकसान, बिगर धन्धे नर से नारायण बनने के। सभी की कमाई खत्म हो जाती है। *नर से नारायण बनने का धन्धा बाप ही सिखलाते हैं।* तो फिर कौन सी पढ़ाई पढ़नी चाहिए। जिनके पास धन बहुत है, वह समझते हैं स्वर्ग तो यहाँ ही है।

उत्तर 10- *D.सतयुग- त्रेता में*

वह सब है हद की पढ़ाई, यह है बेहद की पढ़ाई। बाप तुमको बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं। *यह भी जानते हो यह बाप, टीचर, सतगुरू कल्प-कल्प आते हैं फिर यही पढ़ाई पढ़ाते हैं सतयुग-त्रेता के लिए। फिर प्राय:लोप हो जाता है। सुख की प्रालब्ध पूरी हो जाती है ड्रामा अनुसार।*

उत्तर 11- *A.स्प्रीचुअल ज्ञान नहीं लेते इसलिए*

बाप तो कोई के गर्भ से नहीं निकलते हैं। समझाते हैं मीठे-मीठे रूहानी बच्चों, रूह ही पढ़ती है। *सब संस्कार अच्छे वा बुरे रूह में रहते हैं। जैसे-जैसे कर्म करते हैं, उस अनुसार उन्हें शरीर मिलता है। कोई बहुत दु:ख भोगते हैं। कोई काने, कोई बहरे होते हैं। कहेंगे पास्ट में ऐसे कर्म किये हैं जिसका यह फल है। आत्मा के कर्मों अनुसार ही रोगी शरीर आदि मिलता है।*

उत्तर 12- *A.ब्रह्मा,विष्णु,शंकर देवता हैं, शिव तो परमात्मा हैं*

श्रीकृष्ण का जो मर्तबा है वह दूसरे को मिल नहीं सकता। प्राइम मिनिस्टर का मर्तबा दूसरे को थोड़ेही देंगे। बाप का भी मर्तबा अलग है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी अलग है। *ब्रह्मा, विष्णु, शंकर देवता है, शिव तो परमात्मा है। दोनों को मिलाकर शिव शंकर कैसे कहेंगे। दोनों अलग-अलग हैं ना। न समझने के कारण शिव शंकर को एक कह देते हैं।*

उत्तर 13- *B.जैसा-जैसा राजा वैसी-वैसी उनकी भाषा चलती है*

सतयुग में जब तुम चलेंगे तो वहाँ अंग्रेजी आदि दूसरी कोई भाषा तो होगी नहीं। तुम जानते हो सतयुग में हमारा राज्य होता है, उसमें हमारी जो भाषा होगी वही चलेगी। फिर बाद में वह भाषा बदलती जाती है। अभी तो अनेकानेक भाषायें हैं। *जैसा-जैसा राजा वैसी-वैसी उनकी भाषा चलती है*

उत्तर 14- *C.आत्मा में*

अपने को आत्मा समझना है और एक बाप को याद करना है ताकि भूत सब भाग जाएं। बाप है पतित-पावन। 5 भूतों की तो सबमें प्रवेशता है। *आत्मा में ही भूतों की प्रवेशता होती है* फिर इन भूतों अथवा विकारों का नाम भी लगाया जाता है देह-अभिमान, काम, क्रोध आदि।

उत्तर 15- *D. B और C*

ऐसे नहीं कि सर्वव्यापी कोई ईश्वर है। *कभी भी कोई कहे कि ईश्वर सर्वव्यापी है तो कहो सर्वव्यापी आत्मायें हैं और इन आत्माओं में 5 विकार सर्वव्यापी हैं।* बाकी ऐसे नहीं कि परमात्मा सर्व में विराजमान है।

उत्तर 16- *B.वह तो सर्वव्यापी है*

जन्म-जन्मान्तर के पाप तुम्हारे सिर पर हैं। पापों से मुक्त होने के लिए ही तुम बुलाते हो। साधू-सन्त आदि सब पुकारते हैं - हे पतित-पावन..... अर्थ कुछ नहीं समझते, ऐसे ही गाते रहते हैं, ताली बजाते रहते हैं। *उनसे कोई पूछे - परमात्मा से योग कैसे लगावें, उनसे कैसे मिलें तो कह देंगे वह तो सर्वव्यापी है।*

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (56) खण्ड - {112}

प्रश्न 1- मनुष्य की चलन कैसे सुधरती है ?

A- याद से

B- पवित्रता से

C- सुख से

D- श्रीमत से

प्रश्न 2- बाप की कृपा से सुख घनेरे । सुख घनेरे किसको कहा जाता है ?

A- पवित्रता को

B- राजा साहुकार बनना

C- 21 जन्म स्वर्ग में

D- बाप की छत्रछाया में

प्रश्न 3- ताकत क्या चीज़ है - रूहानी ताकत कैसे मिलती है ?

A- सर्वशक्तिमान बाप से योग लगाने से मिलती है।

B- साइंस से

C- ज्ञान

D- साइलेंस में रहने से मिलती है

प्रश्न 4- कई फास्ट (उपवास) रखकर शरीर छोड़ देते हैं, वह -

A- ब्रह्म लोक में जाते हैं।

B- दुःखी होकर मरते हैं।

C- बहुत सुख पाते हैं ।

D- स्वर्ग में जाते हैं।

प्रश्न 5- कमाई कैसे होगी ?

A- ज्ञान रत्नों की धारणा से

B- बाबा से मिलने से

C- बाप को याद करेंगे तो

D- आशीर्वाद से

प्रश्न 6- कौन सा शौक रखो ?

A- अविनाशी धन कमाने का

B- बहुत मीठा बनने का

C- याद की यात्रा का

D- विनाशी धन कमाने का

प्रश्न 7- बहुतों में कौन सा भूत बैठा हुआ है ?

A- क्रोध का

B- काम का

C- देह-अहंकार का

D- लोभ का

प्रश्न 8- बाप अपने बच्चों पर कौन-सी मेहर (कृपा) करते हैं ?

A- बाप बच्चों के कल्याण के लिए डायरेक्शन देते हैं।

B- सतोप्रधान बनाते हैं।

C- 21 जन्मों का वर्सा देते हैं।

D- याद की यात्रा सिखाते हैं।

प्रश्न 9- इस देवता धर्म में ताकत बहुत है। यह ताकत कहाँ से मिलती है ?

A- ज्ञान से

B- याद की यात्रा से

C- सर्वशक्तिमान् बाप से

D- पवित्रता के बल से

प्रश्न 10- पूज्य की, पूजा कर फिर उनको उठाकर समुद्र में डाल देते हैं। गणेश को, माँ को, सरस्वती को भी डुबोते हैं। इसको क्या कहेंगे ?

A- तमोप्रधान भक्ति

B- आसुरी गुण वाले

C- अंधश्रद्धा

D- कितना अज्ञान है

प्रश्न 11- अशुभ आशायें किस की होती हैं ?

A- मनुष्य की

B- रावण की

C- क्रिमिनल दृष्ट वालों की

D- किसी की नहीं

प्रश्न 12- यहाँ तो किसको भी पता नहीं पड़ता। तुम्हारे सम्बन्धी यह नहीं जानते कि तुम क्या पढ़ाई पढ़ते हो क्योंकि -

A- यहां भगवान पढ़ाते हैं।

B- ऊंच पढ़ाई है।

C- गुप्त है।

D- यह विचित्र पढ़ाई और विचित्र पढ़ाने वाला है।

प्रश्न 13- अपनी जांच करनी है -

A- कितना आत्मभिमानी बने हैं ?

B- सहनशील बनना है ?

C- हमारे में दैवीगुण हैं ?

D- बुद्धियोग बाबा से है ?

प्रश्न 14- किस एक बात में तुम बच्चों को बहुत-बहुत खबरदारी रखनी है ?

A- मन्सा-वाचा-कर्मणा अपनी जबान पर

B- लोकलाज कुल की मर्यादाओं पर

C- बुद्धि विकारी दुनिया में न जाये

D- क्रिमिनल आई तो नहीं है

प्रश्न 15- सम्पूर्ण निर्विकारी बनने के लिए -

A- हियर नो ईविल, टॉक नो ईविल...

B- गंदी बातें न तो सुननी है, न मुख से बोलनी है।

C- देह-अभिमान के वश हो कोई छी-छी काम नहीं करने हैं।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 16- बच्चे कहते हैं बाबा हमारे शहर में चलो तो बाप कहते हैं -

A- जरूर आयेंगे।

B- बच्चों को ही जाकर सबका कल्याण करना है।

C- क्या कांटों के जंगल में बन्दरों को देखने चलूं।

D- बाबा सब जगह नहीं जा सकते।

भाग (56) खण्ड {112} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- *B.पवित्रता से*

अभी तुम बच्चे जानते हो हम पुरूषार्थ करते हैं - सुख घनेरे पाने के लिए। इन लक्ष्मी-नारायण को सबसे जास्ती सुख घनेरे हैं ना। मुख्य है पवित्रता की बात। पवित्रता के सिवाए पीस और प्रासपर्टी मिल नहीं सकती। इसमें चलन बहुत अच्छी चाहिए। *मनुष्य की चलन सुधरती है पवित्रता से।* पवित्र हैं तो उनको देवता कहा जाता है।

उत्तर 2- *C. 21जन्म स्वर्ग में*

सुख घनेरे किसको कहा जाता है, वह भी नहीं समझते। अभी तुम यहाँ सामने बैठे हो, जानते हो यहाँ कितने दु:ख घनेरे हैं। यह है दु:खधाम। *वह है सुखधाम। किसकी बुद्धि में नहीं आता है कि हम 21 जन्म स्वर्ग में बहुत सुखी रहते हैं।* तुमको भी पहले यह अनुभव नहीं था।

उत्तर 3- *A.सर्वशक्तिमान बाप से योग लगाने से मिलती है*

बाप समझाते हैं - यह 5 विकार रूपी रावण तुम्हारी सारी ताकत छीन लेते हैं इसलिए भारतवासी कंगाल बन पड़े

हैं। ऐसे मत समझो साइन्स वालों में बहुत ताकत है, वह ताकत नहीं है। *यह रूहानी ताकत है। जो सर्वशक्तिमान बाप से योग लगाने से मिलती है।*

उत्तर 4- *B.दु:खी होकर मरते हैं*

ब्रह्म ज्ञानियों के श्वांस भी सुखाले (सुख वाले) हो जाते हैं। ब्रह्म की ही याद में रहते हैं, परन्तु ब्रह्म लोक में कोई जाता नहीं है। आपेही शरीर छोड़ दें - यह हो सकता है। *कई फास्ट (उपवास) रखकर शरीर छोड़ देते हैं, वह दु:खी होकर मरते हैं।* बाप तो कहते हैं खाओ पियो बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी।

उत्तर 5- *C.बाप को याद करेंगे तो*

बाबा राय देते हैं - यहाँ बच्चों को अपनी उन्नति के चांस बहुत अच्छे हैं। यहाँ तुम आते ही हो कमाई करने के लिए। बाबा से सिर्फ मिलने से कमाई थोड़ेही होगी। *बाप को याद करेंगे तो कमाई होगी।* ऐसे मत समझो बाबा आशीर्वाद करेंगे, कुछ भी नहीं।

उत्तर 6- *C.याद की यात्रा का*

तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना है। सच्चे-सच्चे स्टूडेन्ट बनो। अच्छे स्टूडेन्ट जो होते हैं वह एकान्त में बगीचे में जाकर पढ़ते हैं। तुमको भी बाप कहते हैं भल कहाँ भी चक्र लगाने जाओ अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करो। *याद की यात्रा का शौक रखो।*

उत्तर 7- *C.देह-अहंकार का*

माया किसको भी छोड़ती नहीं है। पहलवानों से तो और ही लड़ती है। *कई बच्चे अपने देह के अहंकार में बहुत रहते हैं।* बाप कितना निरहंकारी रहते हैं। कहते हैं मैं भी तुम बच्चों को नमस्ते करने वाला सर्वेन्ट हूँ। वह तो अपने को बहुत ऊंच समझते हैं। यह देह-अहंकार सब तोड़ना है।

उत्तर 8- *A.बाप बच्चों के कल्याण के लिए डायरेक्शन देते हैं*

बाप बच्चों के कल्याण के लिए जो डायरेक्शन देते हैं, यह डायरेक्शन देना ही उनकी मेहर (कृपा) है। बाप का पहला डायरेक्शन है - मीठे बच्चे, देही-अभिमानी बनो। देही-अभिमानी बहुत शान्त रहते हैं उनके ख्यालात कभी उल्टे नहीं चल सकते।

उत्तर 9- *C.सर्वशक्तिमान बाप से*

सो तो तुम जानते हो कि पावन बनाने वाला एक बाप ही है, उसकी याद से ही पावन बनेंगे। फर्स्ट नम्बर नई दुनिया में पावन यह देवी-देवता ही हैं। पावन बनने में देखो ताकत कितनी है। तुम पावन बन पावन दुनिया का राज्य पाते हो इसलिए कहा जाता है *इस देवता धर्म में ताकत बहुत है। यह ताकत कहाँ से मिलती है? सर्वशक्तिमान् बाप से।*

उत्तर 10- *D.कितना अज्ञान है*

मन्दिरों में देवियों की पूजा करते हैं, उनको ही फिर पानी में जाकर डुबोते हैं। *कितना अज्ञान है। पूज्य की, पूजा कर फिर उनको उठाकर समुद्र में डाल देते हैं। गणेश को, माँ को,

सरस्वती को भी डुबोते हैं।* बाप बैठ बच्चों को कल्प-कल्प यह बातें समझाते हैं। रियलाइज़ कराते हैं - तुम यह क्या कर रहे हो!

उत्तर 11- *B.रावण की*

यह कोई नई बात नहीं। तुमने अनेक बार यह पद पाया है। दुनिया को तो बिल्कुल पता नहीं है कि यह क्या पढ़ते हैं। बाप तुम्हारी सब आशायें पूर्ण करने आते हैं। *अशुभ आशायें रावण की होती हैं।* तुम्हारी हैं शुभ आशायें। क्रिमिनल कोई भी आश नहीं होनी चाहिए।

उत्तर 12- *D.यह विचित्र पढ़ाई और विचित्र पढ़ाने वाला है*

तुम्हारे सम्बन्धी यह नहीं जानते कि तुम क्या पढ़ाई पढ़ते हो। उस पढ़ाई में तो मित्र-सम्बन्धी सब जानते हैं, इसमें कोई जानते हैं, कोई नहीं जानते हैं। कोई का बाप जानता है तो भाई-बहन नहीं जानते। कोई की माँ जानती है

तो बाप नहीं जानता *क्योंकि यह विचित्र पढ़ाई और विचित्र पढ़ाने वाला है।*

उत्तर 13- *C.हमारे में दैवीगुण हैं ?*

ऐसा कोई बाप थोड़ेही होगा जो बच्चों को किसको तंग करता हुआ पसन्द करेगा वा न पढ़ता पसन्द करेगा। तुम बच्चे जानते हो वहाँ ऐसे कोई बच्चे होते नहीं। नाम ही है देवी-देवता। कितना पवित्र नाम है। *अपनी जांच करनी है - हमारे में दैवीगुण हैं?*

उत्तर 14- *A.मन्सा-वाचा-कर्मणा अपनी जबान पर*

मन्सा-वाचा-कर्मणा अपनी जबान पर बड़ी खबरदारी रखनी है। बुद्धि से विकारी दुनिया की सब लोकलाज कुल की मर्यादायें भूलनी है। अपनी जांच करनी है कि हमने कितने दिव्यगुण धारण किये हैं? लक्ष्मी-नारायण जैसे सिविलाइज्ड बने हैं? कहाँ तक गुल-गुल (फूल) बने हैं?

उत्तर 15- *D.उपरोक्त सभी*

योगबल हो तब ही विकर्म विनाश हों। सम्पूर्ण बनें तब तो सम्पूर्ण दुनिया में आ सकें। बाप भी शंख ध्वनि करते रहते हैं। *सम्पूर्ण निर्विकारी बनने के लिए गंदी बातें न तो सुननी है, न मुख से बोलनी है। हियर नो ईविल, टॉक नो ईविल...... देह-अभिमान के वश हो कोई छी-छी काम नहीं करने हैं।*

उत्तर 16- *B.बच्चों को ही जाकर सबका कल्याण करना है*

बच्चे कहते हैं बाबा हमारे शहर में चलो। बाबा कहते, तुम बच्चों को ड्रामा अनुसार सर्विस करनी ही है। गाया जाता है फादर शोज़ सन। *बच्चों को ही जाकर सबका कल्याण करना है।* बाप बच्चों को समझाते हैं - यह भूलो मत - हम युद्ध के मैदान में हैं।